एक

हुजूर 1

यूं तरस खाते रहे काहे हुजूर ?
जिन्दगी का अर्थ है आहें हुजूर

शहर की सारी हवा थम जायेगीं,
अब बहेंगी सिर्फ अफवाहें हुजूर

सूर्यने कर दी खड़ी जब अड़चनें,
नींद बतलाती नईं राहें हुजूर

तोहफ़ें में अश्क मोती के दिये,
आप झूठे मान ले चाहे हुजूर

फूल देते क्यूं रहे हर शख्स़ को ?
है नहीं हर शख्स दरगाहैं हुजूर

■

10.03.1990

दो

हुज़ूर 2

आप से शिक्वा है मेरा, एक है शिक्वा हुज़ूर
इस हथेली का ही सारा ले गये नक्शा हुज़ूर ?

पिंजड़े में वह परिंदा फिर से वापस आ गया
किस जगह जायें जहां ना और हो खतरा हुज़ूर ?

ओंठ की चूपकी है मस्जिद : और क्या है शेख जी ?
आंख का ढलना नहीं क्या बंदगी-सज़दा हुज़ूर ?

मैं यहां छत के तले तो आप थे राहेसफ़र–
क्यूं फ़फ़ोलों से भरे तलवे मेरे, कहना हुज़ूर ?

कुछ गलतफ़हमी हमारे बीच यूं है लाजवाब
झील है गहरी कि डूबा चांद है गहरा हुज़ूर ?

कौन-सी ऐसी गज़ल : तेरी न हो मौजूदगी ?
कौन-सा पल है न मुझमें आपका-अपना हुज़ूर ?

■

28.08.1991
18.12.1991

तीन

घरों की आंख खूलते ही दिशाएं जाग जायेगीं
सूरज के रथ की आहट से हवाएं जाग जायेगीं

यहां पतझड़ का मौसम भी यकायक फूल पाता है,
तुम्हारे आगमन पर ये लताएं जाग जायेगीं

अकेलापन लिए कैसे बितेगी रात निद्रा में
किधर से कौन जाने कईं बलाएं जाग जायेगीं

मनोहर, रिक्त कोरा एक काग़ज़ के सिवा क्या है ?
तुम्हारे दस्तख़त पाकर दुवाएं जाग जायेगीं

उदय का अर्थ क्या है, अर्थ क्या है अस्त का दोस्तो
मनोहर सो रहा होगा, सभाएं जाग जायेगीं

■

1990

चार

रह गये हम हाथ को मलते हुए
घर जलाकर दोस्त सब चलते हुए

याद आती बापु की हर सांझ को
देखता जब सूर्य को ढलते हुए

है गली सुनसान जब से तू नहीं
क्यों तमस है दीप के जलते हुए

चेहरे पे कईं दरारें हो गईं
आइने को यार, संभलते हुए

दूर समदर पार तेरा देश है
पांव मिट्टी के मिले गलते हुए

■

1990

पांच

छलकती रही ज़िंदगी की सुराही
अचानक सुरालय गया छोड़ राही

शिवालय तरफ़ चल दिये शेख जी तो
बहे शंख से स्वर : इलाही इलाही

नहीं मैं मरा हूं, मग़र जी रहा हूं
मिरी ये गज़ल दे रही हैं गवाही

सकल सांस यादें सपन यातनाएं
रहेंगे, तथापि न होगी तबाही

रहस्योंभरी सांझ डूबी नदी में
रहा हाथ में अजनबी बुद्बुदा ही

■

1991